कमलेश्वर के लघु-उपन्यास

प्रथम अध्याय

हिन्दी लघु-अुपन्यास - स्वरूप अेवं तत्व विवेचन

अुपन्यास -

लघु-अुपन्यास -

लघु-अुपन्यास के तत्व -

१. कथावस्तु -

२. पात्र और चरित्र चित्रण -

३. कथोपकथन -

४. वातावरण -

५. भाषा-शैली -

६. अुद्देश्य -

- o -

अुपन्यास

वास्तव में हिन्दी में अुपन्यास विधा का अुद्भव योरोपीय अुपन्यास के प्रभाव के कारण हुआ हैं। योरोपीय अुपन्यासों का प्रभाव सबसे पहले बंगला अुपन्यासों पर पड़ा और कदाचित यही कारण है कि बंगला अुपन्यासों की देखा-देखी में हिन्दी में अुपन्यासों का अुद्भव हुआ। अंग्रेजी में अुपन्यास को 'नॉवेल' कहा जाता है। बंगला में अिसे 'अुपन्यास' कहते हैं। वास्तव में अंग्रेजी का 'नॉवेल' शब्द लैटिन के NOVUS शब्द से निकला है। NOVUS का अर्थ है 'नवीन'। अितालवी भाषा में 'नॉवेल' शब्द का मतलब है - लघु कथा। वास्तव में अंग्रेजी का 'नॉवेल' शब्द अितालवी के नॉवेला से प्रभावित है, जिसकी व्युत्पत्ति NOVUS से मानी जाती है। गुजराती विव्दान अिसको 'नवल कथा' कहते हैं। मराठी में 'नॉवेल' को 'कादम्बरी' कहते हैं।

लघु-अुपन्यास

लघु-अुपन्यास वास्तव में अुपन्यास साहित्य की ही विधा है। घनश्याम मधुपजीने अपने शोध प्रबन्ध (हिन्दी लघु-अुपन्यास) में अिसको अेक स्वतंत्र विधा स्वीकार कर लिया है। कथावस्तु (PLOT) जब कहानी से बड़ी और अुपन्यास से छोटी हो जाती है, तो आमतौर पर अुसको 'लघु-अुपन्यास' कहते हैं। अंग्रेजी में लघु-अुपन्यास नाम की कोअी स्वतंत्र विधा नहीं है। जबकि हिन्दी में यह अेक बिलकुल स्वतंत्र विधा स्वीकार की गयी है। आकार की दृष्टि से अगर हम सोचें तो बड़े अुपन्यासों को अुपन्यास और छोटे अुपन्यासों को लघु-अुपन्यास कहना सम्भवतः समीचीन अेवं तर्क संगत नहीं होगा। आकार की दृष्टिसे लघु अुपन्यास और अुपन्यास में रेखा खींचना जरा कठिन काम है। मैं तो य ही कहूँगा कि जिस अुपन्यास में किसी अेकमात्र संवेदना का ही विस्तार पाया जाता है, वह लघु-अुपन्यास है। अुपन्यास में अेक से अधिक संवेदनाअें हो सकती हैं। दूसरा भेद यह भी बता सकते हैं कि लघु-अुपन्यासों में पात्रों की संख्या बिलकुल कम रहा करती है तो अुपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक रहा करती है। तीसरा अेक और भेद बता सकते हैं वह यह है कि अुपन्यास में अनेक प्रासंगिक कथाअें साथ साथ चल सकती हैं, मगर लघु-अुपन्यास में यह सम्भव नहीं हो पाता। क्योंकि लघु-अुपन्यास का अेकमात्र अुद्देश्य होता है - किसी पात्र के मानसिक संघर्ष को अुभारना अथवा किसी अेकमात्र घटना का विस्तार करना। डॉ. अिन्द्रनाथ मदान कहते हैं - ''लघु-अुपन्यास कहानी और अुपन्यास - दोनों के बीच की स्थिती है।'' घनश्याम मधुपने अपने शोध प्रबन्ध में (हिन्दी लघु-अुपन्यास) कहा है - ''वस्तु जब कहानी से वृहत अेवं अुपन्यास से लघु हो जाती है, तब वह लघु-अुपन्यास का स्वरूप ग्रहण कर लेती है।''[१]

लघु-अुपन्यास के तत्व

वास्तव में लघु-अुपन्यास के तत्वों का निरूपण करते समय हम यह निःसन्देह कह सकते हैं कि जो अुपन्यास के तत्व हैं, वेही लघु-अुपन्यास के भी हो सकते हैं। क्या कहानी, क्या अुपन्यास, क्या महाकाव्य, क्या नाटक, सभी में कथावस्तु रहा ही करती है। लघु-अुपन्यास और अुपन्यास तथा कहानी में जो भेद है, वह मूलतः प्रस्तुतीकरण का ही है। लघु-अुपन्यास के तत्व निम्नांकित है -

१) कथावस्तु -
२) पात्र और चरित्र चित्रण -
३) कथोपकथन -
४) वातावरण -
५) भाषा-शैली -
६) अुद्देश्य -

(१) कथावस्तु -

कथावस्तु लघु-अुपन्यास का अेक प्रमुख तत्व है। लघु-अुपन्यास का आकार का सीमित होने के कारण अुसमें अेक ही प्रमुख कथा रहती है। अिसमें प्रासंगिक कथाओं के लिअे गुंजाअिश नहीं होती। लघु-अुपन्यासकार को चाहिअे कि वह कथानक यथार्थ जीवन से ग्रहण करें। लघु-अुपन्यास के लिअे प्रत्यक्षानुभूति की जरूरत होती है। लघु-अुपन्यासकार जीवन की किसी अेक सत्य घटना अथवा पात्र को लेकर अुपन्यास की रचना करता है। जैनेन्द्रकुमारजी के अुपन्यास अिस कोटि के अंतर्गत आते हैं। कमलेश्वरजी के अुपन्यास अिसी कोटि में आते हैं। कथावस्तु का संवेदनशील होना आवश्यक है। लघु-अुपन्यास

की कथावस्तु की अेक और विशेषता है, अुसकी क्षिप्रता। लघु-अुपन्यास की कथावस्तु में तीव्रता अेवं सम्प्रेषणीयता होनी चाहिअे। वस्तुतः लघु-अुपन्यास जीवन की किसी अेक संवेदना का ही विस्तार करता है। अिसकी और अेक विशेषता यह भी है कि अुसमें अेकतानता अथवा संकेतात्मकता हो। अिन बातों के कारण लघु-अुपन्यासों में प्रभावान्विति आती है। लघु-अुपन्यास के लिअे वैयक्तिक अनुभूति का होना निहायत जरूरी है। अिससे आज के अधिकांश लघु-अुपन्यासों में आत्मकथात्मक शैली पायी जाती है।

(२) पात्र और चरित्र चित्रण -

लघु-अुपन्यास में जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है, लघु-होने के कारण अुसमें पात्रों की संख्या कम रहा करती है। दो या तीन पात्रों को प्रमुखता देकर लघु-अुपन्यासों की सर्जना की जाती है। लेकिन अुपन्यासकार को पात्रों का निर्माण बड़ी सजगता अेवं सावधानी के साथ करना पडता है। मिसाल के तौर पर कमलेश्वर जी अथवा जैनेंद्रजी के लघु-अुपन्यास लिअे जा सकते हैं। कमलेश्वरजी के 'तीसरा आदमी' में मैं, चित्रा और सुमंत - ये तीन पात्र ही प्रमुख हैं। लघु-अुपन्यास का फोकस प्रमुख रूप से या तो नायक अथवा नायिका पर ही रहता है। लघु-अुपन्यासकार पात्रों का मानसिक संघर्ष भी प्रस्तुत करता है। पात्रों के चरित्र चित्रण में अुसे मनोविश्लेषण शैली का आलम्बन लेना पडता है। लघु-अुपन्यास के पात्र अधिक प्रभावपूर्ण हुआ करते हैं। लेखक पात्र के किसी अेक चारित्रिक पहलू को विशेष प्रभाव के साथ प्रस्तुत करता है। अिस कारण वह पात्र अन्य पात्रों से असाधारणत्व प्राप्त करता है। मिसाल के तौर पर कमलेश्वरजी के 'तीसरे आदमी' का मैं, 'डाकबंगला' की अिरा अथवा 'अनदेखे अनजाने पुल' की निन्नी आदि। लघु-अुपन्यासकार पात्रों का चरित्र चित्रण करते समय कलात्मकता का सहारा लेता है। लघु-अुपन्यास

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अेक नयी प्रयोगशील विधा है। अिसके सहारे लेखक नित्य नये नये प्रयोग करते आये हैं। लघु-अुपन्यासों में कथावस्तु के बजाय पात्रों का मानसिक संघर्ष ही दिखाअी देता है।

(१) कथोपकथन -

लघु-अुपन्यास का अेक विशेष महत्वपूर्ण तत्व है - कथोपकथन। कथोपकथन दो तरह की भूमिकाअें निभाता है - अेक तो वह पात्रों के चरित्र चित्रण पर प्रकाश डालता है, दूसरे कथावस्तु का विकास करने में सहयोग देता है। लघु अुपन्यासों की कथोपकथनों की निम्नांकित विशेषताअें बता सकते हैं -

१. कथोपकथन संक्षिप्त अेवं स्वाभाविक हों।

२. कथोपकथन पात्रों के मानसिक संघर्ष पर प्रकाश डालने में समर्थ हों।

३. कथोपकथन सीधे, सरल अेवं स्पष्ट हों।

४. कथोपकथन में प्रवाह अेवं गति हों।

५. कथोपकथन कथावस्तु के विकास में सहायक हों।

६. कथोपकथन में नाटकीयता अेवं संवेदनशीलता हों।

लघु-अुपन्यासों में कथोपकथनों के कारण ज़िन्दादिली आती है। छोटे छोटे संवाद पाठकों को तुरन्त प्रभावित करते हैं। मिसाल के तौर पर कमलेश्वर के 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' के संवाद लिअे जा सकते है -

''हाँ, आज वह नहीं आअेंगे। रम्मी ने आहिस्तासे बता दिया।''

''क्यों ?....''

''कुछ बात है।''

''क्या बात है अम्मा.....बताओ न।''

"आज शायद पुलिसवाले तहकीकात के लिये आयेंगे।"

"तो बाबूजी का होना और भी जरूरी है।"

कमलेश्वर के 'आगामी अतीत' इस लघु उपन्यास के ये कथोपकथन चांदनी के चरित्र पर प्रकाश डालने में सक्षम हैं -

"हाँ। ठीक कह रही हूँ, तुम अमीरों के ये इश्क-विश्क के चोंचले अपने लिये बेकार हैं। हम इश्क नहीं करते, पेट भरते हैं, पेट। पाँच मिनट में एक आदमी फ़ारिग होता है समझे। यही सब करना है तो हमारे यहाँ एक बुढ़िया भी है। वह पचास रुपये महीने में चली आयेगी। औरत रखने की तुम्हारी हवस भी पूरी हो जायेगी और पैसा भी बचेगा।"

"क्या बकती हो चांदनी।" कमल बोसने टेढ़ी नजरोंसे देखा।

"बक नहीं रही हूँ। सीधी बात कर रही हूँ। ईमानदारी का धंधा है अपना। क्या नही है मुझमें बोलो......कानी हूँ, खुतरी हूँ, तुम पैसे देते हो तो हम भी अपनी हड्डियाँ तुड़वाते हैं, माँस नुचवाते हैं। कुछ करना - वरना हो तो करो, नहीं तो हमें छुट्टी दो। हूँ....दस दिन सा....ले... ....योंही गुजर गये फ़ोकट में।"

भाषा-शैली -

लघु-उपन्यास का एक और तत्व है शैली। इसकी शैली प्रवाहपूर्ण, सरल, स्पष्ट होनी चाहिये। इसमें किसी भी तरह की दुरूहता नहीं होनी चाहिये। आजकल लघु-उपन्यास के क्षेत्र में भिन्न शैलियों का प्रयोग किया जा रहा है। प्रत्येक लेखक का हर उपन्यास अपने पहले उपन्यास से एकदम भिन्न होता है। मिसाल के तौर पर जैनेन्द्रकुमार के उपन्यासों को लिया जा सकता है। लघु उपन्यास की शैली दो तरह की हुआ करती है -

१. कथावस्तु की दृष्टि से -

२. रूपात्मक दृष्टिसे -

कथात्मक शैलीका प्रयोग करने से लघु-अुपन्यास में अेक तरह की सांकेतिकता आती है। असल में यही सांकेतिकता लघु-अुपन्यास में अपना अन्यतम स्थान रखती है। कमलेश्वर तथा अुषा प्रियंवदा के अुपन्यास अिस कोटि में आते हैं।

रूपात्मक दृष्टिसे देखो तो लघु-अुपन्यास में नयी नयी शैलियों का प्रयोग हो रहा है। अिसके साथ साथ आजकल 'मैं' शैली का भी लघु-अुपन्यास में प्रयोग हो रहा है। अुपन्यास की शैलियाँ कअी प्रकार की हो सकती हैं -

१. वर्णनात्मक शैली -

२. मनोविश्लेषणात्मक शैली -

३. पत्र शैली -

४. डायरी शैली -

५. आत्मकथात्मक शैली -

भाषा -

लघु-अुपन्यास की भाषा स्पष्ट, सरल तथा स्वाभाविक होनी चाहिअे। अुसमें सम्प्रेषणीयता रहनी चाहिअे। भाषा अैसी हो जो पाठक के हृदय को तुरन्त छू लें। भाषा में कहीं भी क्लिष्टता अेवं दुरूहता नहीं होनी चाहिअे। वरना अुपन्यास नीरस बनने की सम्भावना रहती है।

अुद्देश्य -

दरअसल अुपन्यास के दो प्रमुख अुद्देश्य रहा करते हैं - अेक तो मनोरंजन

और दूसरा अुद्बोधन। सिर्फ मनोरंजन ही साहित्य का अुद्देश्य नहीं है। कोअी भी साहित्यकार किसी न किसी अुद्देश्य को सामने रखकर अपनी रचना का निर्माण करता रहता है। लघु-अुपन्यास में यह अुद्देश्य विशेष रुपसे नजर आता है। लघु-अुपन्यास जीवन का सम्पूर्ण चित्रण करने के अिलावा मानवजीवन के किसी विशिष्ट अंग अेवं समस्या का चित्रण करता है। और अिस समस्या को प्रत्यक्ष समूर्त करने का प्रयास करता है। अिस समस्या का समाधान ढूँढने की जिम्मेदारी पाठकों की हुआ करती है। कमलेश्वर, जैनेन्द्रकुमार, यशपाल, अथवा अुषा प्रियंवदा आदि के लघु-अुपन्यास सोद्देश्य कहे जा सकते हैं। लघु - अुपन्यास मानसिक संघर्ष सामाजिक, तथा वैयक्तिक समस्याओं को प्रत्यक्ष प्रस्तुत करता है। कमलेश्वर का 'तीसरा आदमी' में मानसिक संघर्ष दिखाया गया है। जैनेन्द्रकुमार के 'त्यागपत्र' में भी सामाजिक समस्या को अुठाया गया है। राजेन्द्र यादव और अुषा प्रियंवदा आदिने मध्यवर्गीय लडकियों की समस्याओं को अुठाया है। अिस प्रकार हम कह सकते हैं कि लघु-अुपन्यास अेक निश्चित अुद्देश्य को सामने रखकर रचा जा सकता है।